Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, DEC-JAN, 2022, VOL-10/49

भारतीय संस्कृति की व्यापकता

प्रो. गीता सिंह

निदेशक, सेंटर फॉर प्रोफेशनल डेवलपमेंट इन हायर एजुकेशन (सीपीडीएचई), यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

Paper Received On: 25 JAN 2022

Peer Reviewed On: 31 JAN 2022

Published On: 1 FEB 2022

Abstract

संस्कृति मानवीय सभ्यता का अभिन्न अंग है। यह प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मानवीय व्यवहार को सुदृढ़ता प्रदान करती है तथा समयानुरूप अपने आपको विकसित करती रहती है जो इसके समायोजन के गुण को दर्शाता है। विश्व की सभी सभ्यताओं में भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन, स्थाई एवं समायोजित संस्कृति है जो किसी भी भारतीय में सामान्य रूप से परिलक्षित होती है। प्रस्तुत लेख में भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त विवेचना करते हुए इसकी विशेषताओं का वर्णन किया गया है एवं वर्तमान संदर्भ में भारतीय संस्कृति की व्यापकता को विवेचित करने का प्रयास कर रहा हैं।

Scholarly Research Journal's** is licensed Based on a work at **www.srjis.com

प्रस्तावना

संस्कृति मनुष्यों के विचारों और व्यवहार के स्वरूप को दर्शाती है जिसमें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संगठन के मूल्य, विश्वास, आचरण के नियम और स्वरूप शामिल हैं। यह प्रक्रियाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रियाओं के द्वारा स्थानांतरित होती रहती हैं। संस्कृति में वह सभी तथ्य सम्मलित होते हैं जिससे किसी समाज की विचारधारा एवं कार्यों का पता चलता है। इस प्रकार सामूहिक जीवन की सभी उपलब्धियों को संस्कृति कहा जाता है। दूसरे शब्दों में संस्कृति हमारे द्वारा सीखा गया वह व्यवहार है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है जिसे सामाजिक आदतों, रीति-रिवाजों, धर्म, विश्वास, परंपरा, आर्थिक संगठनों तथा राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से भी व्यक्त किया जाता है। रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार-''संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है। यह एक आत्मिक गुण है जो मनुष्य के स्वाभाव में उसी तरह व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन। इसका निमार्ण एक अथवा दो दिन में नहीं होता, युग-युगान्तर में होता है।'' प्रस्तुत लेख में भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त विवेचना करते हुए इसकी विशेषताओं का वर्णन किया गया है एवं वर्तमान संदर्भ में भारतीय संस्कृति की व्यापकता को विवेचित करने का प्रयास किया जा रहा है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारतीय संस्कृति

संस्कृति का स्वरूप देशकाल की परिस्थिति के अनुरूप निरंतर बदलता रहता है। संस्कृति से तात्पर्य मानव निर्मित वह भावात्मक संगठन या व्यवस्था से है जिसके अंतर्गत समाज के रीति-रिवाज, विचार, पहनावा, राजनैतिक एवं आर्थिक व्यवस्था आदि वे सभी तथ्य सम्मलित होते हैं जो मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं (मिश्रा, 2014)। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है यह इस बात से भी परिलक्षित होती है कि जहाँ मिस्र, यूनान, रोम आदि की प्राचीन संस्कृतियाँ समय के साथ नष्ट हो गई और केवल उनके अवशेष शेष रह गए लेकिन भारतीय संस्कृति आज तक जीवित है इसके मूल सिद्धांत भी वही हैं जो प्राचीन काल में थे। हम ग्राम पंचायतों, जाति व्यवस्था तथा संयुक्त परिवार प्रणाली को देख सकते है। भारतीय समाज की संरचना में आध्यात्मिक गुण निहित है जैसे भगवान कृष्ण, महावीर स्वामी एवं महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं आज भी हमारे समाज में व्यापक रूप से मौजूद है तथा इनकी शिक्षा सभी व्यक्तियों को प्रेरणा प्रदान करती है। आध्यात्मिकता, कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास, अहिंसा, सत्य, चोरी, सतीत्व आदि के मूल्य आज भी इस देश के व्यक्तियों को प्रेरित करती है। भौतिक विकास एवं सामग्री सभ्यता के अंतर्गत आती है जबकि जीवन जीने की कला, रीति-रिवाज, परंपराएं, संस्कृति के अंतर्गत आती हैं। भौतिक विकास एक सीमा तक संभव है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति आज भी मौजूद है जबकि सभ्यताएं नष्ट हो गई क्योंकि भारतीय संस्कृति के विकास का आधार आध्यात्मिकता थी भौतिकता नहीं। इस प्रकार भारतीय संस्कृति को एक प्राचीन संस्कृति कहा जा सकता है जिसका अतीत वर्तमान में भी जीवित है (उपाध्याय, 2018)। पल्लवरम, चिंगलपेट, वेल्लोर, मद्रास के पास तिन्निवल्ली, सोहन नदी की घाटी, पश्चिम पंजाब में पिंडीघेव क्षेत्र, उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर के रेहंड क्षेत्र तथा मध्य प्रदेश में नर्मदा घाटी पाषाण युग की यादें ताजा करती हैं। होशंगाबाद और महेश्वर यह स्पष्ट करते हैं कि भारत मानव संस्कृति के विकास की भूमि रहा है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो आदि स्थानों में की गई खुदाई के आधार पर हमें पूर्व-ऐतिहासिक युग की विकसित सभ्यता और संस्कृति का पता चलता है जिसका समय लगभग 3000 ई.पू. है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति लगभग 5000 वर्ष पुरानी है जिसकी व्यापकता वर्तमान समय में भी हमारे समक्ष स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है।

भारतीय संस्कृति की विशेषता

परंपरागत भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता पर अधिक बल देते हुए नैतिक मूल्यों, उदारता, सादगी एवं मितव्ययिता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है। यहाँ की जातियों, जनजातियों, जातीय समूहों तथा धार्मिक समूहों और संप्रदायों में फैली भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. वृहत दृष्टिकोण- भारतीय संस्कृति की संरचना मनुष्य को एक दिव्य रचना के रूप में ब्रह्मांड की अवधारणा के भीतर रखती है। यह केवल मानव-केंद्रित ही नहीं है बल्कि सृष्टि के सभी तत्वों, जीवित और निर्जीव दोनों को परमात्मा की अभिव्यक्ति के रूप में मानती है। इसलिए यह भगवान के द्वारा निर्मित संसार के अस्तित्व का सम्मान करती है। इस प्रकार यह विचारधारा मनुष्य, प्रकृति और ईश्वर को एक समग्र रूप में संश्लेषित करती है। यह सत्यम-शिवं-सुंदरम के विचार से भी परिलक्षित होता है (सिंह, 2018)।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

2. सहिष्णुता- भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता सहिष्णुता है। भारत में सभी धर्मों, जातियों, समुदायों आदि के लिए सहिष्णुता एवं विनम्र भाव पाया जाता है। कई विदेशी संस्कृतियों ने भारत पर आक्रमण किया एवं भारतीय समाज ने प्रत्येक संस्कृति को समृद्ध होने का अवसर प्रदान किया। भारतीय समाज ने शक, हूण, शिथियान, मुस्लिम, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध संस्कृतियों को स्वीकारा एवं उसका सम्मान किया। सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की भावना भारतीय समाज की एक अद्भुत विशेषता है (मिश्रा, 2014)। ऋग्वेद के अनुसार है- "सत्य एक है फिर भी विद्वान इसका विभिन्न रूपों में वर्णन करते हैं। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि "दूसरों की प्रार्थना करने वाले वास्तव में मुझ से प्रार्थना कर रहे हैं।" यह विचार सहनशीलता की पराकाष्ठा है। भारत में विभिन्न धर्मों का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व है और सभी एक-दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं - हालाँकि कुछ धार्मिक संगठनों द्वारा धर्म परिवर्तन की गतिविधियों से यह परंपरा बुरी तरह प्रभावित हुई है। भारत में मौजूद सभी धर्मों का समान रूप से सम्मान किया जाता है। भारतीय संस्कृति वास्तविकता की विविधता को स्वीकार करती है एवं दृष्टिकोणों, व्यवहारों, रीति-रिवाजों और संस्थानों की बहुलता को आत्मसात करती है। यह एकरूपता के पक्ष में विविधता को दबाने की कोशिश नहीं करती है। भारतीय संस्कृति का आदर्श वाक्य विविधता में एकता और एकता में विविधता दोनों है।

3. निरंतरता और स्थिरता- भारतीय संस्कृति के सिद्धांत आज भी उतना ही व्यावहारिक है जितने प्राचीन काल में थे। भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है- इसका सतत प्रवाह है। चूंकि भारतीय संस्कृति मूल्यों पर आधारित है इसलिए इसका विकास निरंतर होता रहा है। कई वर्ष बीत गए, कई परिवर्तन हुए, कई विदेशी आक्रमणकारियों का सामना करना पड़ा लेकिन भारतीय संस्कृति की ज्योति आज भी निरंतर प्रज्वलित हो रही है। भारतीय संस्कृति को उसके वर्तमान सांस्कृतिक मानकों को देखकर समझा जा सकता है। भारतीय संस्कृति की स्थिरता आज भी अपने आप में अद्वितीय है। भारतीय संस्कृति हमेशा निरंतरता के भीतर परिवर्तन का पक्षधर रही है। यह क्रमिक परिवर्तन या सुधार के पक्ष में है। यह अचानक या तत्काल परिवर्तन का पक्ष नहीं लेता है। इसलिए विचारों में अधिकांश परिवर्तन टिप्पणियों और व्याख्या के रूप में आए है न कि मूल विचार प्रणालियों के रूप में (मिश्रा, 2014)।

4. अनुकूलन क्षमता- भारतीय संस्कृति को अमर बनाने में अनुकूलनशीलता का महत्वपूर्ण योगदान है। अनुकूलन योग्यता समय, स्थान और अवधि के अनुसार बदलने की प्रक्रिया है। यह किसी भी संस्कृति के दीर्घायु का एक अनिवार्य तत्व है। भारतीय संस्कृति में समायोजन की अनूठी विशेषता है जिसके परिणामस्वरूप यह आज तक बनी हुई है। भारतीय परिवार, जाति, धर्म और संस्थाओं ने समय के साथ खुद को बदला है। भारतीय संस्कृति की अनुकूलता और समन्वयन के कारण इसकी निरंतरता, उपयोगिता और कार्यकलाप अब भी विद्यमान हैं। डॉ. राधा कृष्णन ने अपनी पुस्तक 'इंडियन कल्चर: सम थॉट्स' में भारतीय संस्कृति की अनुकूलन क्षमता का वर्णन करते हुए कहा है कि भारत में सभी लोग चाहे वे काले हों या श्वेत, हिंदू या मुस्लिम, ईसाई या यहूदी सभी आपस में भाई-भाई है जो यह दर्शाता है कि हमारा देश अपने आप में संपूर्ण ब्रह्मांड है क्योंकि यह सभी जाति, धर्म, लिंग, नस्ल, वर्ण एवं उनके विचारों को अपने में समाहित किये हुए हैं। हमें उन चीजों के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए जो ज्ञान की सीमा से परे है एवं जिनके बारे में कुछ भी कहना संभव नहीं है। मानव जाति के प्रति हमारी आशा उस सम्मान और भक्ति पर आधारित थी जो लोगों में दूसरों के विचारों के प्रति थी।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

5. कर्तव्यनिष्ठा- भारतीय संस्कृति अधिकारों के अपेक्षा धर्म या नैतिक कर्तव्य पर अधिक बल देती है। यह माना जाता है कि व्यक्ति अपने अधिकारों की प्राप्ति करने के बजाए अपने कर्तव्य का पालन करे। इस प्रकार सामुदायिक या पारिवारिक दायित्वों पर जोर देते हुए भारतीय संस्कृति व्यक्ति की स्वतंत्रता और स्वायत्तता के बजाय परस्पर निर्भरता को बढ़ावा देती है (चावला एवं अन्य, 2017)।

6. कर्म एवं पुनर्जन्म - भारतीय संस्कृति में कर्म एवं पुनर्जन्म की अवधारणा का विशेष महत्व है। ऐसा माना जाता है कि अच्छे कर्म से पुण्य की प्राप्ति होती है और अगले जन्म में वह उच्च क्रम में जन्म लेता है एवं आराम से जीवन व्यतीत करता है। बुरे कर्म करने वाले अपने अगले जन्म में निम्न क्रम में जन्म लेता है तथा दुखी जीवन व्यतीत करता है। उपनिषद में कहा गया है कि कर्म के फल का सिद्धांत सही है। मनुष्य जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। इसलिए मनुष्य को अपने सम्पूर्ण जीवन में अच्छे कर्म करने की आवश्यकता है जिससे उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सके अर्थात् वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर सके। यह अवधारणा केवल उपनिषद की ही नहीं है बल्कि जैन एवं बौद्ध धर्म में भी इसी अवधारणा को स्वीकार किया गया है। इस प्रकार पुनर्जन्म की अवधारणा कर्म के सिद्धान्त से संबंधित है (मिश्रा, 2014)।

7. आध्यात्मिकता- अध्यात्म भारतीय संस्कृति की आत्मा है यहाँ आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है। इसलिए मनुष्य का अंतिम लक्ष्य भौतिक सुख-सुविधाएं को प्राप्त करना नहीं बल्कि आत्म-साक्षात्कार करना है। भारतीय संस्कृति जिसने अपनी विशेषताओं को बनाए रखा परिणामस्वरूप यह सम्पूर्ण देश की राष्ट्रीयता एवं संस्कृति को एकता के सूत्र में पिड़ोकर अविभाज्य बनाए रखा। राष्ट्र संस्कृति बन गयी एवं संस्कृति राष्ट्र बन गया। वैदिक काल में जब भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति हुई तब यह समय के साथ सप्तसिंधु, ब्रम्हवर्त, आर्यावर्त, जंबुद्वीप, भारतवर्ष या भारत में फैल गई। अपनी स्थायित्व एवं शक्ति के कारण यह भारत की सीमाओं से परे विदेशों में पहुंच गयी और वहां भी अपनी पहचान बनाते हुए स्थापित हुई (सिंह, 2018)।

8. धार्मिक प्रभुत्व- भारतीय संस्कृति का केन्द्र बिन्दु धर्म है। वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, गीता एवं त्रिपिटक भारतीय संस्कृति के लोगों को प्रभावित करते हैं। इन पुस्तकों में आशावाद, आस्तिकता, त्याग, तपस्या, संयम, अच्छा आचरण, सत्यता, करुणा, प्रामाणिकता, मित्रता, क्षमा आदि का विकास हुआ है। हालांकि भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें धार्मिक भाषा एवं धार्मिक साहित्य भी शामिल है और यह सभी हिंदू धर्म के अनुयायी जाति, भाषा, सामाजिक स्थिति में विश्वास करते हैं एवं निष्ठा के साथ प्रार्थना करते हैं। वह भाषा संस्कृत है, यह वेद या अन्य ज्ञान का एक मात्र माध्यम है। यह हिंदू धर्म और दर्शन का एकमात्र स्रोत है या एकमात्र दर्पण है जो सही ढंग से हिंदू विचारों, रीति-रिवाजों एवं परंपराओं का प्रतिबिंब है। यह क्षेत्रीय भाषाओं के विकास का स्रोत है एवं महत्वपूर्ण धार्मिक और वैज्ञानिक विचारों के प्रकाशन के लिए सामग्री प्राप्त करने का भी स्रोत है।

भारतीय संस्कृति की वर्तमान समय में व्यापकता

भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है इसकी विशेषता का महत्व केवल भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने इसकी विशेषता को स्वीकार किया है। जिस प्रकार सकड़ों वर्षों से विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के लोग यहाँ पर निवास कर रहे हैं तथा उनमें सामंजस्य बना हुआ है यह अपने आप में ही एक अनोखी बात है। वर्तमान समय

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

में जहाँ विभिन्न देश आपसी गृह युद्ध में व्यस्त है वहीं भारतवर्ष में युद्ध की संभावना स्वाधीनता के पश्चात कभी बन नहीं सकी, इसका मुख्य कारण भारतीय संस्कृति है। प्राचीन काल से ही इस देश में अनेक संकृतियाँ एवं परम्पराएँ एक साथ प्रविष्ट हुई। इन सभी परम्पराओं को भारतीय संस्कृति ने सहिष्णुतापूर्वक आत्मसात किया तथा सभी गुणों को एकत्र कर एक राग संप्रेषित करने का प्रयत्न किया जिसे ग्रहणशीलता कहा जाता है। इस ग्रहणशीलता के परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति में समृद्धि हुई। यह गुण बाकी किसी भी संस्कृति में नहीं पाई जाती है। भारतीय संस्कृति वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व व्यस्था के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में देखी जाती है चाहे योग हो या आयुर्वेद। भारतीय संस्कृति को सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकार किया है एवं इसकी प्रशंसा की है। विगत वर्षों में जिस तरह से भारत ने सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्तर पर वृद्धि की है यह सब भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों के बिना असंभव है (शर्मा, 2014)। अतः भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा इस तथ्य से परिलक्षित होती है कि वर्तमान समय में विभिन्न देश युद्ध, प्रतियोगिता एवं आपसी तनाव के बीच फंसकर रह गए हैं फिर भी भारत शान्ति एवं विश्व प्रेम के अभय मंत्र के साथ उनका मार्गदर्शक का कार्य कर रहा है। भारतीय संस्कृति जितना ही अधिक परिवर्तित होती रही है उतना ही वह अपने मूल स्वरूप को बनाए रखने में सक्षम रही हैं। भारतीय आत्मा की शक्ति ने हमें इस विषम परिस्थिति में अपनी अस्मिता बनाए रखने की क्षमता प्रदान की है। वह राष्ट्र को अपना चरित्र और जीवन्तता बनाए रखने में योग देती है (मिश्रा, 2014)।

संदर्भ

शर्मा, आर. (2021). भारतीय संस्कृति का क्या महत्व है?
https://www.vokal.in/question/143U-bharatiya-sanskriti-ka-kya-mahatva-hai
चावला, एच. एवं महापात्र, एच. (2017). ग्लोबलाईजेशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन इंडियन कल्चर एंड टेक्नोलजी. रिसर्च गेट. पृष्ठ-1-15
उपाध्याय, के. एस. (2018). भारतीय सांस्कृति प्रासंगिकता. गगनंचल. पृष्ठ- 9-14
सिंह, उ. के. (2018). इक्कीसवीं सदी और भारतीय संस्कृति. गगनंचल. पृष्ठ- 64-67
मिश्रा, उ. (2014). शिक्षा का समाजशास्त्र. अनुभव पब्लिकेशन हाउस. पृष्ठ- 36-37